

नाम - मातृका तन्त्रम्

शारदा

N. - 55 72

72.

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान दिल्ली  
श्री रामजीराम

श्रीरघवीरपरिभर जम्मा

भातुका तन्त्रम्

L72

59

M. K. Marwaha

14(11)



S.F.

म. र. म.







ਸ੍ਰੀ:  
ਮ:  
੦



यमयामयकैठपुमविनीयमदिधेमुलिनीयपु  
 मुकुलममममविनीयमुनीरुमिनीमक्तिः  
 मुमुनिमुमुकेटुमलिनीयमिदुल्लेखीः परमममे  
 वीनवकेटिमुडिमकिडमंपउविमुसुगी ॥  
 डिमनुमुपवरगिदेइलेहेपिमकुलकं डिपं  
 कीकीकीकीरमः केरुपं वगुवंमयं क  
 मरीरंउउः परमा मुिरमयं मरुमयं क  
 मरीरंउउमः न वक्रंमरुमनुं एपरुदि  
 मउविपगीउंमरुमनुं पवउउमउंएपउ  
 मुपमेवेविमुभिपिः कः मलकलं  
 डममुमडीमरुमुमुमुमणडिधिः यधिः  
 गायडीकमपुपु कडीपडिमुपुपुग  
 डीकनंमिमरुकुलीमरुल्लेखीमरुम  
 मुट्टेवडमुवकं लकीकीरीलंमोमक्तिः  
 मममककमममिदुजेपवविनिमिगः ॥  
 पुल्लेखमरुमनिधरुपुपुममगडिउ  
 डिउकपिउंकउमलीपममल्लेखमी



भवति अदः इति भवति ठ विड भनः एड नुं  
 पठे वि भंशु प्रमलिन इयं वा इयं पठे वि किं  
 निष्ठु इत्यमिकं न कि भय गे भय नः ए ग  
 पीरु कि मल नान शु विगते वि मयु न  
 मउषा ठे गुरु पीरु कि मसु उषु दृष्टा कि  
 पउ के ए वं पठे न वे मि भ मु उ न पु मं मयः  
 वरु किं कषु उये वि भय मा त्रिः लठे नः म  
 वमसु विनिष्ठु उ एय उ भय नै पमः ए वं  
 ठे भय मा न य मि मा त्रि न ए य उ म  
 पुन मु नै व क उ हं उ उः मि ह्ठ वे दू वं  
 उ डि मी भ द क ठे उ उ व धूः पठ

लः परिप्लुः ॥ १० ॥

डि मीः

मीः

००



विभीषणः ॥ गुरुनीं ठवे मुहं कनेयन संकरः ॥  
 उभयं मे उमि सुमि यमि मुदि मुमं ॥ २३ ॥ श्रीमं कनेय ॥  
 विमिवं वद्वि मभा उरुं वभने इवि कुधि उभा विमि कन  
 मभा युजं गनु भा यमं वज्ज ॥ उलोह पद भुम द मभु  
 उरु मउं रप उ उरु वर य उ म उं मुन नू वि वि न म न म ॥  
 उ डि मी भा क उ उ उ उ पुष मः प लः ॥ डि मी मी ॥  
 डि वर भी म न म व लु म व उ उ वि मं व य उ य क धि उं  
 न व म म म न वि क न उ क व व र य उ उ उः मु न म उ उ  
 व मि उः व न म न म लि न पु व मं व क व ठ वे उ उ  
 वि उ उ उ न व उ उ मं उः प म क उ उ डि मं कः ॥ डि  
 म ॥ प म क प मं मु म म पु मं मु उ उ मि न ले क मे वे  
 मी न डि गं म न के म म पु प उ म म यु जं म म म उ वि कु धि उं  
 उ मु वं मु उ उ व ल म नं वि ने वि म पु न लं मु म उ उ  
 व उ क म म मे ठ र म न म म पु न लं म क न म म य मि वे  
 म म म व वि मु ठ ग उ म पु लि न न य ज य रू पं प म  
 न उ उ उ मि उ व न उ य न डि प मं उ य रू पं उ मु म म म  
 डि उः वि म म नं म पु म म म पं क र ग र उ उ र म  
 म म पु प उ म उ मं म उ मु डिः म उ उ म म म यु जं मु व ल  
 क म उ उ के म उ उ उ उ व र मं वि म यु जं डि पं म क म ॥

श्रीमं उल  
 म उ पि प मः



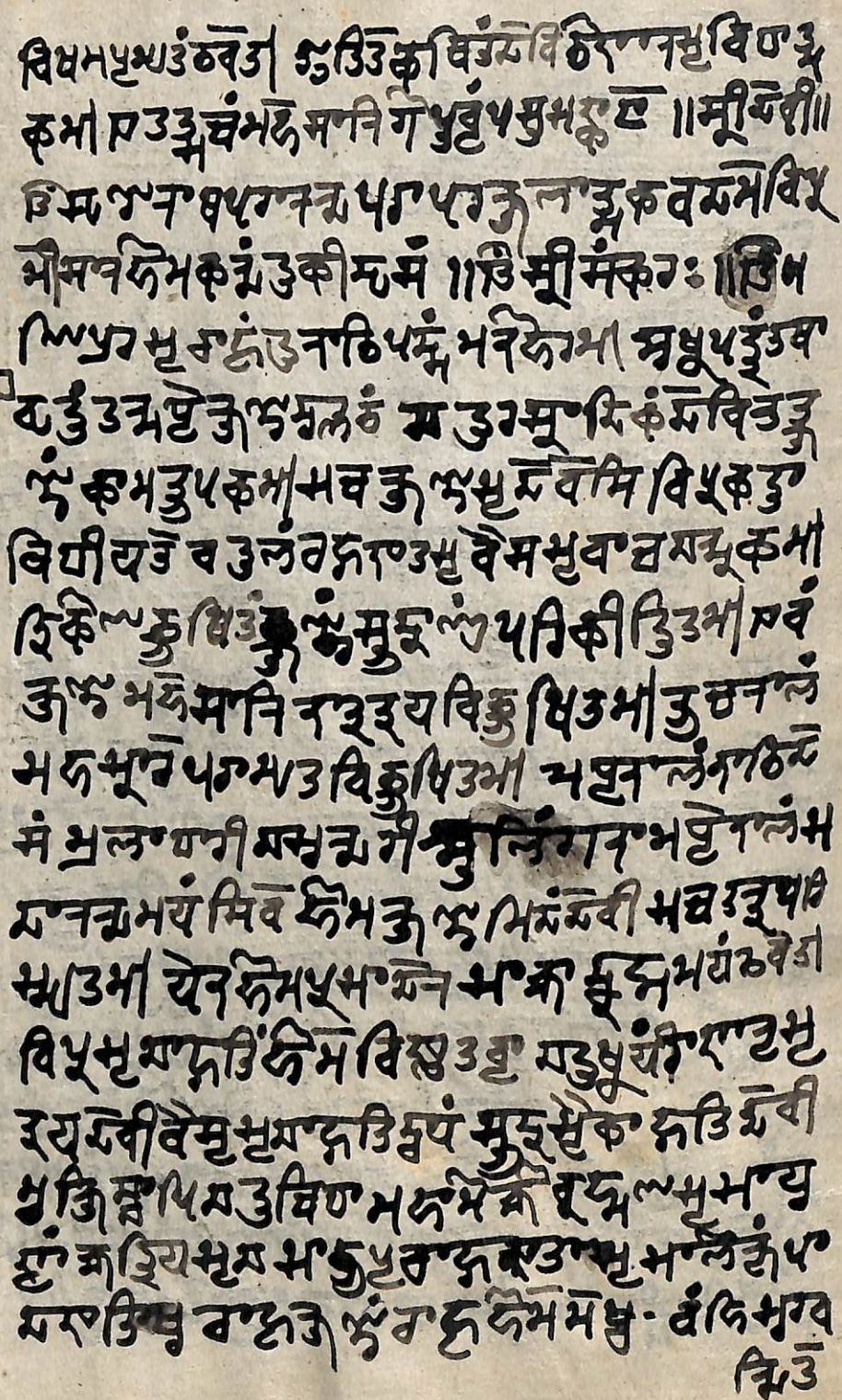












CC-0 Sharada Manuscripts at Rashtriya Sanskrit Sansthan Lucknow, Digitized by eGangotri



एतन्निर्दिष्टं कृत्वा कर्म कृतं दत्तं पुरुषमनुमः वा दत्तं निमेष  
 भूमि सिद्धि विधुति १ मं मयः ७ डिउ कषिउं कतेउ  
 इलं भग भुमं न वज्र वृं यमि गै भप षेउ इयि प्रिय  
 श्री गुरु दत्त ॥ भट्ट एनं भग ५ ८ मचउने मूरं भय ए  
 डिठलन कषिउं मरपीउडु कं मये ॥ श्री मं कगे वर  
 भव यल्लु पिपे विप्र मं मये ने सिप चजी भोडा मल्लं  
 भक यल्लु मरु गिरु दत्त ७ मयः वृद्ध ७ ५ मरु दये गं  
 भट्ट पने प्रियं वरे वृद्ध ७ ५ मरु म निव सिप न किं  
 मरु ७ उडु ल मि व उ प मे मरु मरु कि मे ले ल उ चे उ  
 यं यष ली र उ ले उ रे मिव यष ५ ए ठ गं यष  
 क मं वं यव यो शिषः उष व भट्ट मरु र वृद्ध मि प्रिय  
 ली य उ क इ मरु के मरु मरु कि मे ले ल भय ए ५  
 उष भि मे नि युतः मरु इय मि ध य न गी भट्ट पने  
 मरु वी न उ मं मयः मरु मरु यष व कि मरु म  
 पु यष मि व उ प उ प क रु उ उं ५ ए पुं यष क वि  
 क रिषा उ मरु मरु वी वर मरु वि मरु ए भट्ट मरु वि  
 क र वि उ डु ल नं ल ह उ मरु व वि वि प्र कि मरु प  
 रं मरु मरु ७ वरु मरु उ ए मरु वरु ल न कि मे  
 ले ल वरु मरु नं य मरु वि उ मरु वरु मरु मरु उ



वेरुभयम ॥ उंरुउगीयंकेलिक भगविरु  
 धुमरुं वद्वि मरुयकठवजसपभिसनभरुं  
 भुगलुनपुमयिनी मउरवडिमेवोम पूरुधुं  
 नभमरुज भवुधु लः मविमयः भोगिदेडी  
 ममीश्रिउः वदुकिंकष्टउरे विभावरुडिगुलुं  
 भुक्तिमये एपदे विगेपुधुः पसुमकदपूकम  
 द्विद्विद्विनिः धा त्रिद्विनीयिनमरुधु ॥ उडिमीभ  
 रुकउरुठरे मडीयः पदलः ॥ ३ ॥ उडिमीरुवी  
 उं कालनमदभेमी निचिकलुमिवमुममुं  
 वरुधुगलु पुउववडु भुभुभुभु मगुहं मिवनि  
 मलभगुहं कुरुं पूठे मधुवैधुभदुमव  
 कधं वरुडिनि विज ॥ उडिमीमिवउवय ॥ उं मधु  
 मविधु विद्वि भिभवणनारणयः उउमधंरुवि  
 रुमियमैरुपदिधुमि मउरुमीडिलहैधुम  
 दधुपुउधेवम रुमलं उरुउरुनीवः उडिमीभु  
 ठरुकः ॥ उउउधुमद रुउयदिधुद्वीगवकि  
 उ उरुभेभभवपेडिहमलं कधुवठवजसुउ  
 एवमदसनिगुपुठमउमवम उरुवैउरुउ

श्रीः  
 २



मभिष्टु परमसुगी निचां विप्रवेदविमहं परमकरं  
 भवपन्नविना विमह भुक्ति जलहउ ॥ मीमभिक ॥  
 विंगंगय सुनउमिमे उदेव भयउयमि गंगयः  
 मपिकंरष करं परकुरुं ॥ विमीमिवउवमा  
 प्रकवृद्ध मयीरवि सुगरी मननुषा उभय  
 धेमेमं मेकयग सुभय प्रिणु उदेव उलभीरुती  
 मडीमेक भुगुगी विमिमाजी मयेमहं डीजमे  
 वः मभमगउ उदेवमलिकमपु मल मय विमि  
 मयं उदेव करं रुविमह मेक प्रयकम  
 करं न विना विमिमे सुगरी कं नदिमह  
 मयं विन वि विन भनु मिद्रिगयिकः  
 मयनवृद्ध मयीमल मय भापकय परः  
 मलिगु मय कययं गययं मय प्रिणु मे  
 वममं मय मयं मय मय कय मय वय ॥ विम  
 भिक ॥ विंगंग करं वगी मयं परमकरं  
 करं मय मय मल उ विरुदेह विगंग मय  
 मय मय कय वय लिक वय वय मय मय  
 निमडिमं मय वय ॥ विमीमंकाः ॥ वि करं



श्रीः

4

ॐ उजः पलः ॥ १ ॥ ॐ

其：



CC-0 Sharada Manuscripts at Rashtriya Sanskrit Sansthan Lucknow, Digitized by eGangotri ५७



型:



त्रिभुवमुकीरु मंगवत्तु गेलं मकीरु संमुपुधं  
 कीरु सं गव वरु ५५ मकीरु सं मव कलेदुवंग  
 वकीरु सं वरु मङ्ग ॥ त्रिभुव संकरः ॥ विवदुग दि  
 ता कतु पुषभाङ्ग उमंयुतः उमु ॥ उमं मङ्ग मनि  
 भुय भुन ३ मं मयः विदु मवेठे उरि पा कतु व  
 मनु गा मिरे उमु मवेठे ५५ मव कदु म  
 पकं म उं ठे उरि मवे मिया वल मनु गामिरे उमु  
 मव गेल ५५ मव वरु कं पं विवदु गदि ता कतु  
 पुषभाङ्ग उमं वरु उमु ॥ उमं मङ्ग मनि भुय ५५ मव  
 मङ्ग विवदु ता या कतु या ५५ मङ्ग मनु ता य  
 दि ५५ मभु मङ्ग उं वरु उमु गि की डि उम विवदु ता  
 या कतु या पु डि म मं मय मवेठे मव कलेदु  
 वं ५५ कवि उं वीर वरु म पु मङ्ग वदि मवेठे ५  
 ये वरु य उः उ उ उ पु उ मङ्ग मरु प उ नि य  
 म पु मय उरु म मनि पु म मङ्ग मरु मरुः उ उः  
 मि मङ्ग वे मङ्गी न वरु म मठ पि उं प नं मरु मरु म  
 नि ग र उ क मरु मरुं र पि उ प मय उ म उ डि  
 वं मि वलिं ग कं उ उः प गी म क उ व म म मरु  
 वल ठे मु म उ मं वदि मवेठे म उ उं उ ल क व य म



मूत्रकुतमडमूमगुल्लभनंमिपहुमि उड्डकल्ल  
 ममानिभुलंठवडिनिमिउं गुल्लभनंउड्डकल्ल  
 नंऊनउयमिमचगेमैपरिउड्डकल्लयउममनेपमः  
 भनुमिड्डिड्डेउमुसयउमिमरनीविनः पुड्डकल्लम  
 मनिमउनगीरमममि वीदामिगकिउउमुड्डकल्ल  
 उड्डिकगंपरंभगल्लनैवपमुमिमिमिपुनगुउठवेज  
 उमुविउंविमिडेवउवगेपिउिमूउः रुनगुउमु  
 उंमक्रननेउवभविषममदेमोववेगीडेमुउ  
 रिउड्डकल्लः मरुवड्डेमरुवीदेमरुमरुमिकमु  
 मिः मरुवड्डेमयनंममचपल्लकिउउमरुवड्डे  
 किंकषुउउविमपुड्डकल्लनयकः ॥३॥ डिमीमड्ड  
 कठेरुउउपंममःपल्लः ॥५॥ डिमड्डकल्ल॥  
 डिमरुमीमनमचल्लमचउउविमंवरुमरुगेग  
 मरुड्डः पिमरुड्डेगिड्डमड्डेनपीकिगउउ  
 षननपीरुमिमड्डेनयल्लमरुड्डेनयल्ल  
 गगनगउउनः गल्लेनल्लमरुवमिमउषगुल्ल  
 पीमिनेकेनपयेड्डेनयल्लमरुड्डेनयल्लः ॥  
 डिमिड्डकल्ल॥ डिमड्डकल्लमिमुठगेयल्ल  
 पारिपल्लमिउउमवंपुविमिममचल्लनयल्ल

श्रीः  
 १



CC-0 Sharada Manuscripts at Rashtriya Sanskrit Sansthan Lucknow, Digitized by eGangotri







CC-0 Sharada Manuscripts at Rashtriya Sanskrit Sansthan Lucknow, Digitized by eGangotri



उद्धृती नं षडवदुमि सुप्रपरायेत प्रल्लवमि  
 नमि त्रेन प्ररायेतु पकि उमः पुनरुवीमकेमनि  
 पंमउडूनप्ररायेत प्रल्लयमंउउः वदुकागुमी  
 मममगडा उमुकेतुमुयंपीइ पंमउडुनी मुग्गगी  
 ममपउउमउउमुपुनः प्रल्लममकगउउउ  
 मुपुरायेद्विमनरुयेल्लपममगडा ममपुन  
 विलिमेनमुलमउमउंरायेत यमि ठगुवमिद  
 वीठउमिपंगलठवः उउः मल्लकालीवीरुनि  
 मचमिद्विःकरमुतापकंदु मरुमनियमिप  
 ०मममगडा मरुउउमुपु० मुकिं वउंमरुउ  
 मय मरुउउनेवेमि किं पुनः वरुकेवलम  
 वमुंलठउमउमि मचउधममुगिय मिसगुन  
 लठउममवउमुपउउ धेनमनि पंमउल्ल  
 पूषमंप्ररायनगडा मिडीयंपंमउडूनप्ररायेत  
 मिदं प्रिय मरुमुमिउिप०नेयडुलंलठउ  
 नः मरुउउनेवेमि कलनदउति धेनमी  
 पुनममुप्रविद्यामियषट्पुडपउउः ॥ ३३

श्रीः  
 ७



लंपउंशीदिङ्गपगिउंमीनीलं सविस्वमेकम  
 पदेकुरादुयं रुकरं क० मंमं सकं धेमेमरुलं  
 मकरउयं पउमकरं हयं मम लकरं यधुमेमं  
 क० प० म० म० वउन० पं० क० व० म० प० म० उ० म० क० मे० उ० वि०  
 रु० क० क० म० मि० कु० लं म० क० व० म० रु० मु० क० म० म० क० म०  
 मु० ली० प० उ० ल० क० मि० कु० लं न० म० न० व० क० म० म० न० लं म० क०  
 न० ल० उ० उ० व० ये० क० प० म० य० ग० लं ली० उ० म० व० म० मे० क० उ०  
 दि० दि० लि० म० व० न० क० मं म० य० ग० उ० लं वी० लं प० उ० उ० वं  
 य० शी० मी० लं म० मि० लं उ० मी० मी० लं प० मि० म० प० उ० उ० र०  
 मु० म० म० म० मी० प० उ० म० ग० ग० क० लं उ० उ० म० व० न० य० उ० वं उ०  
 लं वं प० उ० व० य० वं म० म० प० उ० प० म० क० प० लं य० मि०  
 उ० म० म० वं न० म० म० म० व० उ० उ० डि० उ० क० वि० उ० क० उ० क० व०  
 प० म० म० उ० म० गु० न० म० उ० लं प० उ० उ० क० व० म० य० प० म०  
 मि० म० मि० म० म० ग० म० मी० पि० मि० व० म० म० म० म० य०  
 प० म० क० लं प० म० मु० क० व० म० म० उ० वि० ग० लं प० म० लं उ० व० म०  
 म० म० म० म० म० म० मि० म० म० म० म० म० म० म० म० म० म० म०  
 मु० लं वि० लं प० वि० वि० वि० म० लं म० म० म० म० म० म० म० म० म०

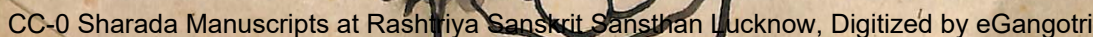


लः पवित्रः ॥ १ ॥  
दि मीः

CC-0 Sharada Manuscripts at Rashtriya Sanskrit Sansthan Lucknow, Digitized by eGangotri



ॐ श्रीं  
महामुनिः





वरिण निप्रुमउ विवमेलायमप्रिडिगलमविराधी  
 ठवज मठयं रायमप्रिडिममउतेमंसयः मकभूरे  
 ठवयउंरिमनु ५५०८मि माएव मिहिलेकेषु निवृत्तपु  
 भीयउ ममभुमंगलनाभ क्वमं परभा सुउभा यमक म  
 नमउंन प्रुमं कंममन येयं मिधुयमउयमपुषा  
 पडिउंठवउं ठुजेयमु मवेमिपुडेहे पिनमीयउं डंमक  
 वममल्लव एमविहं मयेरा पेज ममप्रिडिठलंउमु  
 मउेमनकं वल्लेज ममउं कं वमं वि किम उठेउम  
 सुडि उवमेद नरेयकिं भयन प्रुममिउमा उम  
 मीए मममूद प्रुममउंउउ प्रुय मनेवयुयेगे  
 नउ मलीमं मंमरेज मधुउर मउंमल मउंएउं  
 मउ पी पंमक मउउः वद मउं उद उल्लेउ ॥ मी  
 मी ॥ मउयं कीम मंपुन वरुम परमंमंगी ॥ डि  
 मीमिरेवम ॥ <sup>मी विह विधमन सुवि मधमपु कं ठउं</sup> मय मभुमंगी मी डिठमगी एउ ॥  
 मी ठय मवे मवी मवी मुल वल्ल मउ पिनी कभनी  
 एं मउं पंम नील वल्ल विमिनुयेग मकिवीए मल्ल  
 वल्ल रउ वल्ल विठ वयेउ प्रुठउ मुल वल्ल मभपुडनी

मीः  
 ०३



नीलमन्त्रिः मयः केरुवकं ठं वयेद्रु केउमः  
 ल्वं पुद्रुमकं सविमन्त्रु उद विमन्त्रुः मिव प्र  
 उउः रुद्र प्रये उर देव उ डिप्र म म विद्रु म  
 द विद्रु प डिद्रु प डिप्र विप्र प्र ए न ग रुद्र  
 विद्रु म न म उ प्र व म के म विमन्त्रि लिं  
 गं प्र प्र ए ये ग पं ए म रं मं व उं प्र ए  
 ये प्र प्र य उ उः उ उ मु प्र ए ये दे वी  
 डिप्र म म के म यि नी ॥ मूर्ति वी ॥  
 कि म म य ये सु मं द प य व र  
 व म मं क र म ठ म दे वे मि म य कः क ल ठ  
 क वे उ ॥ डि म्मी मं कः ॥ डि प्र ए ये उ डि वं  
 लिं गं प म म लिं ग क उ व म म लिं गं उ व म म  
 डि प्र ए ये उ म म म म म म म म म म म म म म  
 म म म म म म म म म म म म म म म म म म म  
 व म म म म म म म म म म म म म म म म म म  
 म म म म म म म म म म म म म म म म म म  
 म म म म म म म म म म म म म म म म म म



श्रीः  
०३



CC-0 Sharada Manuscripts at Rashtriya Sanskrit Sansthan Lucknow, Digitized by eGangotri



更:

41003.

四



भमुहं व ममयेनेनीयउ ॥ उं मम उंयेनं ॥ डि ॥

॥



श्रीमालिका तंत्रं समुद्रम्  
(अमुद्रितम्) २७

NO 49

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥

श्री  
५००  
॥  
॥







